jewan yatra1:arunjaity.qxd 9/26/2010 10:11 PM Page 28

संघ-परिवार का पूरा संगठन उनके साथ खड़ा था। देशभर में हजारों की संख्या में संघ के स्वयंसेवक सत्याग्रह करके जेल गए। लंदन के साप्ताहिक 'इकानामिस्ट' ने आपातकाल विरोधी संघर्ष में संघ की मुख्य भूमिका को रेखांकित किया।

लगभग दो महीने बाद गुप्तचर विभाग पंजाब के कुछ भूमिगत नेताओं का पीछा करते हुए दिल्ली के सफदरजंग एन्क्लेव में नानाजी तक पहुंचने में सफल हो गया। कुछ देर तो वह विश्वास ही नहीं कर पाया कि जो नेता उनकी पकड़ में आया है वह नाना देशमुख है। नानाजी के गिरफ्तार होने पर पहले से तय व्यवस्था के अनुसार संगठन कांग्रेस के रवीन्द्र वर्मा ने लोक संघर्ष समिति का मंत्री पद संभाला। संघ का भूमिगत नेतृत्व तो संघर्ष की रीढ़ बना हुआ था।

नानाजी तिहाड़ जेल पहुंच गए। वहां चरण सिंह, प्रकाश सिंह बादल आदि अनेक नेता बंद थे, उनमें घोर निराशा छाई हुई थी। नानाजी ने सभी दलों के एक दल में विलीनीकरण का प्रयास आरंभ किया। तब पुनः उनका चरण सिंह की प्रधानमंत्री बनने की आकांक्षा से सामना हुआ। 17 माह लंबे कारावास में नानाजी को अध्ययन और मनन का अलभ्य अवसर प्राप्त हुआ। वे इस निष्कर्ष पर पहुंचने लगे कि राजशक्ति से नहीं, लोकशक्ति से देश का पुनर्निर्माण होगा। वर्तमान विकृत और पतित राजनीतिक संस्कृति से देश ऊपर नहीं उठ सकेगा। ग्राम आधारित स्वावलंबी समाजरचना के लिए गांव में जाकर प्रत्यक्ष काम करना होगा। समाज के दुर्बलतम व्यक्ति को ऊपर उठाना होगा। नानाजी का मन सत्तालोलुप, सिद्धांतहीन, व्यक्तिवादी राजनीति से उचटने लगा था और वे सत्ता राजनीति से वैराग्य लेकर रचनात्मक कार्य में अपने को समर्पित करने के लिए आतुर होने लगे थे कि इंदिरा गांधी ने अनायास ही 17 जनवरी 1977 को लोक सभा चुनाव कराने की घोषणा करके सबको चौंका दिया। चुनाव की घोषणा होने के तीन दिन के भीतर 20 जनवरी को जनसंघ, कांग्रेस संगठन, भारतीय लोक दल व सोशलिस्ट पार्टी ने जनता पार्टी का गठन करके उसमें अपना विलय कर लिया और एक ही चुनाव चिन्ह पर चुनाव लड़ने का फैसला किया। प्रारंभ में मोरारजी देसाई को अध्यक्ष एवं लालकृष्ण आडवाणी को उसका मंत्री बनाया गया। किन्तु 1 मई 1977 के अधिवेशन में चंद्रशेखर को नवगठित जनता पार्टी का अध्यक्ष और चार महामंत्रियों में एक नानाजी को चुना गया। जेलों से राजनीतिक कैदियों की रिहाई का सिलसिला शुरू हो गया। जे.पी. नानाजी को जल्दी से जल्दी बाहर लाना चाहते थे। नानाजी ने चुनाव न लड़ने का मन बना लिया था, पर जे.पी. ने संदेश भेजा कि अधूरे काम को आगे बढ़ाने के लिए जेल से बाहर आना जरूरी है और जेल से बाहर आने के लिए आपको लोक सभा चुनाव का नामांकन पत्र भरना चाहिए। जे.पी. के आदेश का पालन करने के लिए नानाजी ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में गोंडा जिले के बलरामपुर क्षेत्र से अपने नामांकन पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए और वे जेल से बाहर आ गए। नानाजी बलरामपुर की रानी राजलक्ष्मी देवी को भारी अंतर से हराकर लोक सभा में पहुंच गए। जनता पार्टी 302 सीटें जीत कर पूर्ण बहुमत में आ गई। इनमें सर्वाधिक 86 सीटें पूर्व जनसंघ घटक को मिलीं। 2 फरवरी 1977 को रक्षा मंत्री जगजीवन राम इंदिरा जी के मंत्रीमंडल से त्यागपत्र देकर बाहर आ गए। उनके साथ उत्तर प्रदेश और उड़ीसा के पूर्व मुख्यमंत्री हेमवतीनंदन बहुगुणा और नंदिनी सत्पथी जैसे अनेक प्रभावशाली कांग्रेस छोड़कर बाहर आ गए। उन्होंने 'कांग्रेस फार डेमोक्रेसी' नाम से नया दल बनाया। आपातकाल की निंदा की और जनता पार्टी को समर्थन घोषित कर दिया। चुनाव में पूर्ण बहुमत मिलते ही जनता पार्टी के भीतर प्रधानमंत्री पद के लिए संघर्ष प्रारंभ हो गया। मोरारजी देसाई, चरणसिंह और जगजीवन राम मैदान में थे। नानाजी सहित जनसंघ ग्रुप हरिजन नेता जगजीवन राम को प्रधानमंत्री पद देने के पक्ष में थे पर चरण सिंह के कड़े विरोध के कारण वह संभव नहीं हुआ। यदि उस समय नानाजी की बात मानी गई होती तो भारतीय राजनीति में एक गुणात्मक परिवर्तन आ सकता था। पार्टी एकता उनकी प्राथमिकता थी। इसीलिए वरिष्ठता के आधार पर मोरारजी देसाई को प्रधानमंत्री पद सौंपा गया। मोरारजी भाई ने नानाजी को मंत्रीमंडल में उद्योग मंत्री जैसा महत्वपूर्ण दायित्व देने का विचार किया। मंत्रीमंडल की संभावित सूची में उनका नाम भी प्रचार माध्यमों में प्रसारित हो गया, पर प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया) के कहने पर संगठन-कार्य में अपना पूरा ध्यान केन्द्रित करने के लिए नानाजी ने मोरारजी भाई को फोन करके मंत्रीपद अस्वीकार कर दिया। नानाजी के अनेक उद्योगपति मित्र एवं शुभचिंतक अकबर होटल में बैठे उनके नाम की घोषणा की प्रतीक्षा कर रहे थे। घोषित सूची में उनका नाम न पाकर वे उद्विग्न हो उठे। जब उन्हें पता लगा कि नानाजी ने स्वयं ही मंत्रीपद ठुकरा दिया तो वे आश्चर्य-चकित रह गए और नानाजी के प्रति उनका श्रद्धाभाव दुगना हो

उन्होंने तत्कालीन सत्तारूढ़ की आपातकाल लगाने की मानसिकता को पहले ही भांप लिया था